जनजन जागरण, भोपाल
4 FEB 2017

नमामि देवि नर्मदे- सेवा यात्रा

दुनिया में नदियों के संरक्षण से ही बच सकती है संस्कृति

नर्मदा जयंती के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई। आज हनुवंतिया में माँ नर्मदा की पूजा-अर्चना एवं आरती करने के बाद केबिनेट की बैठक में मध्यप्रदेश के विकास की योजनाओं के संबंध में निर्णय लेकर आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हुई है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के तट पर ही विकसित हुई हैं। नर्मदा घाटी भी इसका अपवाद नहीं है। नर्मदा घाटी का सांस्कृतिक इतिहास गौरवशाली रहा है। माँ नर्मदा का आसपास की धरती को समृद्ध बनाने में बहुत योगदान रहा है। नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश की जीवन-रेखा कहा जाता है। माँ नर्मदा को भारतीय संस्कृति में मोक्षदायिनी, पाप मोचिनी, मुक्तिदात्री, पितृतारिणी और भक्तों की कामनाओं की पूर्ति करने वाले महातीर्थ का भी गौरव प्राप्त है। नर्मदा नदी भारत की सात प्रमुख नदियों में से एक है। प्राचीन काल से ही नर्मदा की धारा में सामाजिक चेतना देखने को मिलती है। नर्मदांचल में अनेक पंथों के संतों का समय-समय पर आगमन हुआ। इनमें कबीर पंथ, सिख पंथ, तारण पंथ, राधावल्लभ पंथ और प्रणामी पंथ प्रमुख हैं। नर्मदा किनारे पर मैकल, व्यास, भृगु, अत्री और कपिल जैसे ऋषियों के तप करने का भी उल्लेख पुराणों में मिलता है। आदि शंकराचार्य ने भी इस भूमि पर तप किया। इन संतों ने अपनी वाणी और संदेश से नर्मदा क्षेत्र के धार्मिक वातावरण को उदार बनाया। इन्होंने इस क्षेत्र को धार्मिक विविधता प्रदान करते हुए यहाँ सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया, जो कि आज तक इस अंचल में विद्यमान है।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

होशंगाबाद के सेठानी घाट का ऐतिहासिक महत्व है। ब्रह्म विद्या सोसायटी के संस्थापक हेनरी स्टल अलकाट ने यहाँ अपने अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ स्नान करके आध्यात्मिक आनंद प्राप्त किया था। इस घाट पर नर्मदा का जन्मोत्सव नर्मदा जयंती के रूप में वर्ष 1976 से मनाया जा रहा है। उस समय यह आयोजन नर्मदा में प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिये ही प्रारम्भ किया गया था, जो आगे चलकर सामूहिक पूजा में बदल गया।

'नमामि देवि नर्मदे- नर्मदा सेवा यात्रा' अभियान इतिहास की उसी परम्परा का पुनर्जीवन है, जो कि प्रदेश के नागरिकों को माँ नर्मदा के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक पहलुओं से परिचित करायेगी। इस यात्रा का उद्देश्य नर्मदा और विश्व की सभी नदियों को प्रदूषण मुक्त रखने के संदेश और नर्मदा तपोभूमि के सामाजिक समरसता के विचार को पूरे प्रदेश, देश और समूची दुनिया में पहुँचाना है। नर्मदा नदी के तट पर स्थित अमरकंटक, भेड़ाघाट, ओंकारेश्वर, महेश्वर और मंडलेश्वर जैसे धार्मिक पर्यटन स्थलों पर श्रद्धालुओं की गतिविधियों से भी लोगों को रोज़गार मिलता है। नर्मदा नदी के किनारे होने वाले अनेक मेले और सांस्कृतिक आयोजन भी लाखों लोगों को रोज़गार देते हैं। मैं तो कहता हूँ कि माँ नर्मदा अपने तट पर बसे प्रदेशवासियों को केवल रोज़गार ही नहीं देती है, बल्कि जो भी उसकी वंदना करता है, उस पर मुक्त हस्त से कृपा बरसाती हैं। आज हनुवंतिया जैसा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल भी यहाँ विकसित हो पाया है। यह भी प्रदेश को एक नई पहचान देगा। माँ नर्मदा की कृपा से ही प्रदेश विकास की ओर अग्रसर है। मैया की कृपा से ही सूखे कंठों और खेतों को पानी मिल रहा है। माँ नर्मदा 4 करोड़ से अधिक लोगों को पीने के लिये पानी और 17 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की व्यवस्था करती है। माँ की कृपा से ही हमारे अन्न के भण्डार भरे हैं और बिजली मिलने से घरों का अंधेरा दूर हुआ है। माँ नर्मदा की कृपा से 2400 मेगावाट बिजली उत्पन्न होती है। माँ की कृपा से ही प्रदेश को चार बार कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हुआ है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज 'नमामि देवि नर्मदे- नर्मदा सेवा यात्रा' अभियान एक जन आंदोलन बन गया है। सभी लोग बड़े उत्साह और उमंग के साथ दुनिया के सबसे बड़े नदी संरक्षण अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।